|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | **Verse, Character, Word** | **Intended Word** | **Dialogue** | | generally Bottom 1:2:2 |  | You were best to call them generally, man by man, according to the scrip. | | agggravate Bottom 1:2:72 |  | ...But I will aggravate my voice so that I will roar you as gently as any sucking dove... | | obscenely Bottom 1:2:94 |  | We will meet, and there we may rehearse most obscenely and courageously. Take pains. Be perfect. | | odious Bottom (as Pyramus) 3:1:72 |  | Thisbe, the flowers of odious savors sweet -- (Corrected by Quince in next line.) | | Cavaliery Bottom 4:1:22 |  | Nothing, good monsieur, but to help Cavaliery Cobweb to scratch... | | heard Bottom 4:1:209 |  | The eye of man hath not heard... | | seen Bottom 4:1:209, 210 |  | ...the ear of man hath not seen... | | hand Bottom 4:1:210 |  | ...man's hand is not able to taste,... | | tongue Bottom 4:1:210, 211 |  | ...his tongue to conceive,... | | heart Bottom 4:1:211, 212 |  | ...nor his heart to report what my dream was. | | paramor Quince 4:2:10 |  | Yea, and the best person too, and he is a very paramour for a sweet voice. | |  |  |  | |  |  |  | | deflowered Bottom (as Pyramus) 5:1:280 |  | O wherefore, Nature, didst thou lions frame, Since lion vile hath here deflowered my dear. | |